बी॰ ए॰ पार्ट-II हिन्दी (प्र०) अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक - 27.03.2021

पाठ्य पुस्तक/नया सम्पर्क
सं०-डॉ० राकेश गुप्त तथा
श्री ऋषि कुमार चतुर्वेदी

काव्य संग्रह - 'बावरा अहेरी' से उद्धृत।

पत्र : चतुर्थ/ छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

यह दीप अकेला (काव्य) की व्याख्या

'यह दीप अकेला' काव्य डॉ० सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन द्वारा रचित है। वे प्रयोगवाद के जनक और नयी कविता के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। प्रयोगवाद और नयी कविता में 'लघु मानव' की महत्ता का प्रतिपादन हुआ है। यह लघु मानव अपनी लघुता में संपूर्णता से युक्त है। इसकी लघुता इसे कभी विचलित नहीं करती। फिर भी कवि इसे चाहते हैं कि वह समूह में रहे। क्योंकि वे समाज, समूह, एकता की महत्ता को समझते हैं। वे एक संपूर्ण समाज का निर्माण करना चाहते हैं। यूनान के महान दार्शनिक 'अरस्तु' ने भी कहा है - "जो मनुष्य समाज में नहीं रहता वह देवता है या दानव।" फिर वे इसे दूसरे और स्पष्ट शब्दों में कहते हैं — "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यहाँ अज्ञेय भी इस बात से अवगत है, क्योंकि वे आधुनिक भाव-बोध के कवि हैं। वे कहते हैं —

यह दीप, अकेला, स्नेह-भरा
है गर्व-भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।
यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा?
पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लायेगा?
यह समिधा : ऐसी आग हठीली बिरला सुलगायेगा।
यह अद्वितीय : यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित :
यह दीप अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।

उक्त पंक्तियों में कवि ऐसे दीपक की बात करते हैं जो स्नेह (प्रेम) रूपी तेल से भरा है। अपने में पूर्ण है। प्रकाश फैलाता है। यह स्वयं में गर्व से भरा मदमाता भी है किन्तु अकेला है। कवि चाहता है कि इस अकेले दीप को भी पंक्ति में शामिल कर लिया जाए। ताकि दोनों की ~~सार्थकता सिद्ध~~ को ~~संपू~~ सार्थकता सिद्ध हो सके।

अर्थात् इस कारण दोनों ही की महत्ता और सार्थकता बढ़ जाए।

यही दशा अकेले मनुष्य की है। उसमें स्नेह, गर्व, मस्ती होते हुए भी तब तक वह मजबूत नहीं बन पाता जब तक वह समाज के साथ नहीं जुड़ता।

यह व्यक्ति है — यह गीत गाता है आज। लेकिन, इस गीत को कल कौन गायेगा? इस गीत को गाने वाला अन्य व्यक्ति भी तो चाहिए। भाग्यवान मनुष्य ही गोताखोर की भाँति मोती ढूँढकर लाता है। ~~इसके~~ इसी प्रकार यज्ञ में जलने वाली लकड़ी (समिधा) स्वयं जल कर किसी को सिद्ध देता है। यह आग सुलगानी प्रत्येक की वश की बात नहीं है। व्यक्ति में स्वयं में अद्वितीय (अनोखा) होता है। पर उसे स्वयं को पहचानना पड़ता है। ~~कवि~~ कवि कहते हैं कि व्यक्ति अपने आप में इस दीप की भाँति सर्वशक्तिमान, सर्वगुण संपन्न है। फिर भी, समाज में उसका विलय समाज और राष्ट्र को मजबूती प्रदान करता है और स्वयं की भी सार्थकता सिद्ध करता है।

इस अकेले दीप को, स्नेहपूर्ण दीप को, ~~दी~~ गर्वीले और मदमाते हुए दीप को उसकी महत्ता और सार्थकता के लिए समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए उसे पंक्ति (समाज) में स्थान देने की बात कवि कहता है। दीप का पंक्ति में विलय व्यष्टि का समष्टि में विलय है। यह आवश्यक है।

क्रमशः ....